International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(I), October - December, 2022, pp. 67-70

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों, व्यक्तित्व विकास एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

राकेश कुमार तिवाड़ी*
डॉ. सुनील कुमार**

प्रस्तावना

मानव विकास के इतिहास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति का विकास होता हैं। शिक्षा के बिना कोई भी राष्ट्र अपना विकास नहीं कर सकता है। शिक्षा न केवल व्यक्ति को अपने वातावरण को अनुकूल करने में सहायता करती है वरन् उसके व्यवहार में ऐसे वांछनीय परिवर्तन कर देती है जिससे वह अपना एवं अपने समाज का कल्याण करने में सफल होता है। शिक्षा वह ज्योति है, जो मानव के जीवन में अज्ञान–रूपी अन्धकार को उजाला प्रदान करती है। शिक्षा से ही व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। मानव जीवन एवं मानव विकास में शिक्षा के महत्त्व के संदर्भ में अरस्तु ने लिखा है कि "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज में रहकर अपना विकास करता है। समाज के लिए व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है।"[1]

- **फ्रोबेल के अनुसार –** "शिक्षा एक प्रक्रिया है जो कि बालकों की अन्तःशक्तियों को बाहर प्रकट करती है।"[2]
- **ब्राउन के अनुसार –** ''शिक्षा समाज शास्त्र और उनके सांस्कृतिक वातावरण के बीच होने वाली अन्तःक्रिया का अध्ययन है।''[3]

किसी व्यक्ति के जीवन में उसकी सफलता केवल उसकी उच्च स्तरीय शिक्षा से ही निर्धारित नहीं होती है, यह निर्धारित होती है उसके 'स्व' की पहचान, उसके मूल्य और उसके व्यक्तित्व से।

वर्तमान समय की बदलती हुई परिस्थितियों के संदर्भ में नैतिक मूल्यों की अवधारणा को शिक्षा से सम्बद्ध करके व्यक्ति एवं समाज में सार्थक व मनोनुकूल परिवर्तन लाया जा सकता है। आज देशवासियों का जिस तेजी से नैतिक पतन हो रहा है वह गहरी चिन्ता का विषय है। देश को चलाने वाले राजनेता पूरी तरह भ्रष्ट, चरित्रहीन, स्वार्थी होने के कारण देश को तेजी से गर्त में ले जा रहे है। आज की नई पीढ़ी पश्चिमोन्मुख होने के कारण सभी बुरे व्यसनों से ग्रस्त होती जा रही है। संयुक्त परिवार टूटते जा रहे है। एकल परिवारों में वृद्ध मां–बाप का तिरस्कार आम बात हो गई है। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा नहीं देने के कारण नइ पीढ़ी संस्कारविहीन व भारतीयता से कोसों दूर होती जा रही है।

मनुष्य की सम्पूर्णता की पहचान उसका व्यक्तित्व है तथा वह जैसे–जैसे समाज के सम्पर्क में आता है उसे समाज के रीति–रिवाजों, परम्पराओं, मूल्यों, आदर्शों तथा जीवन–दर्शन का ज्ञान होता है। चूँकि उसे भी समाज के सदस्य के रूप में आदर्श नागरिक का स्थान प्राप्त करना होता है इसलिए वह स्वयं भी समाज के आदर्शों, मूल्यों, परम्पराओं तथा व्यवहारों को अंगीकार करने का प्रयास करने लगता है।

* शोध छात्र, शिक्षा संकाय, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।
** निर्देशक, शिक्षा विभाग, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।

[1] भार्गव, उर्मिला एवं भार्गव, उषा, (2006) शिक्षा सिद्धान्त व शिक्षण कला, राखी प्रकाशन, आगरा, पृ. 1
[2] लाल, रमन बिहारी एवं तोमर, गजेन्द्र सिंह, (2014)शिक्षा के दार्शनिक आधार, आर लाल बुक डिपो, मेरठ,, पृ. 458
[3] शर्मा, आर.ए. (2017) पाठ्यक्रम शिक्षण कला तथा मूल्यांकन, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, पृ .556

मूल्य

व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का अति महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि मूल्य ही मानव व्यवहार को नियन्त्रित एवं निर्देशित करते हैं तथा पथ–प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं।

प्रत्येक मानव जीवन के कुछ मूल्य होते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक समाज के भी अपने कुछ निश्चित मूल्य होते हैं। मनुष्य तथा समाज अपने इन्ही मूल्यों को प्राप्त करने की चेष्टा करता है और उनके प्रयास भी इन्ही मूल्यों की ओर इच्छित होते हैं। मनुष्य और समाज के जीवन के हर आयाम से सम्बन्धित मूल्य होते हैं जैसे आर्थिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, शारीरिक मूल्य, नैतिक मूल्य आदि।और मनुष्य तथा समाज अपने इन्ही मूल्यों के अनुसार कार्य तथा व्यवहार करते हैं। यही एक प्रकार से उसके प्रेरणा स्रोत होते हैं।

डॉ. कुलश्रेष्ठ ''मूल्य आचरण को संगठित करने की प्रविधियाँ है, ये सार्थक सिद्धान्त हैजो मानव कार्यों के निवेशित प्रारूपों को प्रभवक रूप से निदेशित करते है।''[1]

नैतिक मूल्यों से हमारा तात्पर्य उन मूल्यों से है जिन्हे मानवीय व्यवहारों से सम्बन्धित करने पर जीवन उज्ज्वल तथा उच्च बनता है एवं इन व्यवहारों को उस स्तर का बनाना जिस स्तर को संस्कृति ने मान्य किया है या जो हमारी सांस्कृतिक मान्यताओं परम्पराओं और आदर्शो के अनुकूल हो।

नैतिक मूल्यों का संस्कृति से निकटतम सम्बन्ध है। संस्कृति नैतिक मूल्यों का दर्पण है। विभिन्न संस्कृतियाँ एक ही समय में अलग–अलग जगहों पर, अलग–अलग रूपों में विकसित होती है। इनका प्रादुर्भाव मानव के आचार–व्यवहार पर प्रभाव डालता है।

जिस व्यक्ति में नैतिक गुण नहीं उसका नैतिक चरित्र नहीं वह न केवल स्वयं अपने विकास के लिये वरन् समाज व राष्ट्र के विकास के लिए भी हानिकारक है। नैतिक चरित्र के निर्माण के लिए व्यक्ति के मूल प्रवृत्यात्मक संवेग जितने सुसगंठित होगें तथा नैतिक गुणों के स्थायी भाव जितने अधिक होगें। उसका चरित्र उतना ही सुदृढ़ होगा। पूर्व अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि व्यक्ति के नैतिक मूल्यों का जितना अधिक विकास होगा उतना ही अधिक उसका व्यक्तित्व निखरेगा।

व्यक्तित्व

शिक्षा के क्षेत्र में समस्त शैक्षिक प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु व्यक्तित्व ही माना जाता है। शिक्षा का उद्देश्य ही व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास स्वीकार किया गया है। विद्यार्थी किस प्रकार अपने आसपास के वातावरण से सूचनायें संकलित करते हैं तथा इनका प्रयोग किस शैली के अनुसार करते हैं। यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में एक प्रमुख कारक होता है। प्रत्येक व्यक्ति का समायोजन उसके व्यक्तित्व से निर्धारित होता है।

व्यक्तित्व व्यक्ति की रूचियों, आदतों, व्यवहारों, मनोवृतियों, आकांक्षाओं, इच्छाओं, भावों चारित्रिक गुणों ,बौद्धिक क्षमताओं, आध्यात्मिक एवं संवेगात्मक गुणों व्यवहार शैलियों सामाजिक मूल्यों आदि का अनूठा संगम है जिसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास होता है व्यक्तित्व के अर्न्तगत वे सभी बातें आ जाती है जो व्यक्ति के सम्पुर्ण विकास के लिए आवश्यक हैं। जीवन में नित्य बदलते परिवेश में, सामाजिक समायोजन में व्यक्तित्व का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है इसलिए आज आवश्यक है कि बालक के अच्छे व्यक्तित्व विकास के लिए उसे अच्छा वातावरण भी प्रदान किया जाए।

प्राचीन भारतीय आदि ग्रन्थ वेद में मनुष्य के व्यक्तित्व को उसके शरीर, मन और आत्मा के विकास के रूप में स्वीकार किया गया है। उपनिषदों में व्यक्तित्व को भौतिक आत्म, मानसिक आत्म और आध्यात्मिक आत्म का योग माना गया है, जबकि भारतीय दर्शनों के अनुसार जिस मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि, अहंकार और आत्मा का जितना अधिक विकास हो जाता है, उस मनुष्य का व्यक्तित्व उतना ही अधिक विकसित होता है।

वैलेन्टाइन[2] के अनुसार –''व्यक्तित्व जन्मजात और अर्जित प्रवृत्तियों का योग है।''

---

[1] सिंह, रामपाल एवं सिंह उमा (2007) शिक्षा तथा उदीयमान भारतीय समाज, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा। पृ 25

[2] सिंह गया (2012) अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर.लाल.बुक डिपो,मेरठ। पृ 288

ऑलपोर्ट (1948)[1] के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति में मनोदैहिक गुणों का वह गत्यात्मक संगठन है जो व्यक्ति के वातावरण के प्रति अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।"

वारेन[2] के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति का सम्पूर्ण मानसिक संगठन है जो उसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है।"

व्यक्तित्व एक जटिल एवं गूढ़ प्रत्यय है। अतः इसकी संरचना को समझ पाना अति जटिल कार्य है। व्यक्ति के विशेष गुणों के आधार पर ही उसके व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया जाता है।

व्यक्तित्व निर्माण प्रक्रिया में वंश परंपरा एवं परिवेश दोनों की महत्ती भूमिका परिलक्षित होती है। सामान्यतः तीन प्रकार का व्यक्तित्व दृष्टिगोचर होता है– बहिर्मुखी, अन्तर्मुखी तथा उभयमुखी।

स्प्रैंगर ने मूल्यों के आधार पर व्यक्तित्व के छः प्रकारों से वर्गीकरण किया है–

1. सैद्धान्तिक 2. सामाजिक 3. आर्थिक 4. राजनैतिक 5. धार्मिक 6. सौन्दर्यात्मक

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रात्मक अभिव्यक्ति से है। शैक्षिक उपलब्धि अंग्रेजी के दो शब्दों ।बंकमउपब ।बीपमअमउमदज से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है शैक्षिक उपलब्धि। शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता है। शिक्षा से सम्बन्धित कारकों के परिणामों से होता है। शिक्षा से संबंधित कारकों के परिणामों को शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है। इसका मापन उपलब्धि परीक्षणों द्वारा किया जाता है। उपलब्धि व दक्षता परीक्षणों के माध्यम से यह निश्चित किया जाता है कि शिक्षार्थी क्या व कितना सीख गया है? इसमें भ्ूतकाल का मूल्यांकन किया जाता है। भविष्य के दिशानिर्देशन के लिये यह परीक्षण उपयोगी सिद्ध होता है। इस प्रकार उपलब्धि परीक्षणो के द्वारा यह भी निश्चित किया जाता है कि कुछ समय अध्ययन करने के पश्चात शिक्षार्थी द्वारा क्या सीखा गया, व उसकी किन–किन आदतों व कुशलताओं का विकास हुआ। साथ ही उपलब्धि परीक्षणों द्वारा शिक्षार्थी की तुलना उसके समूह के साथ की जा सकती है।

फ्रीमैन के शब्दों में, ''शैक्षिक उपलब्धि किसी विशेष या विषयों के समूह में ज्ञान या कौशल का मापन करती है।''

शैक्षिक उपलब्धि का सम्बन्ध विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता के मापन से होता है। अधिगम क्षमता या शैक्षिक उपलब्धि अधिक पाये जाने वाले विद्यार्थियों का व्यक्तित्व भी उत्कृष्ट पाया जाता है क्योंकि शैक्षिक उपलब्धि में विद्यार्थियों का दृष्टिकोण विस्तृत होता है और उनके व्यक्तित्व में भी निखार होता चला जाता है। शैक्षिक उपलब्धि अधिक होने से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, नैतिकता विकसित होती है। सामान्यतया देखा जाता है, जो विद्यार्थी कक्षा में सक्रिय रहते हुए अन्तःक्रिया करते हैं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि अधिक पाई जाती है। शैक्षिक उपलब्धि अधिक होने से उनका व्यक्तित्व का विकास भी अधिक होता है।

अध्ययन का औचित्य

शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्ति को विद्वान बनाना ही नहीं है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे व्यक्ति वर्तमान में अपने अस्तित्व को पहचानने में समर्थ हो सके तथा मूल्यों के साथ अपने व्यक्तित्व को संवार सके। मानव को अपनी सफलता प्राप्ति हेतु एक लक्ष्य निर्धारित करना होता है, किन्तु लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कुछ नियमों, संयम, दया, करूणा आदि नैतिक मूल्यों का पालन करना चाहिए। मूल्य ही व्यक्तित्व निर्माण की कुंजी है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति का व्यक्तित्व विकास एवं नैतिक मूल्य उसके सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करते हैं, इस कारण प्रत्येक स्तर पर चाहे वह विद्यार्थी प्राथमिक स्तर का हो, उच्च प्राथमिक स्तर का हो, माध्यमिक स्तर का हो या उच्च माध्यमिक स्तर का हो, उसके व्यक्तित्व विकास एवं नैतिक मूल्यों में श्रेष्ठता लाने का प्रयास होना चाहिए।

---

[1] श्रीवास्तव, डी.एन., वर्मा प्रीति (2014) बाल मनोविज्ञानः बाल विकास, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा। 408.

[2] एस.एस. माथुर (2008); एड्यूकेशन साइकोलॉजी, विनोद पुस्तक मन्दिर, रांगेय राघव मार्ग, आगरा, 413–414.

मानव के जीवन में मूल्यों का महत्त्व अधिक है। उसके जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से सम्बन्धित होता है। यह मूल्य वह अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में ही सीखने लगता है और धीरे–धीरे अपने अंतर में ग्रहण कर लेता है। यदि उसका पालन–पोषण उत्तम वातावरण में हुआ है जहां उच्च नैतिक मूल्य जीवन के लक्ष्य प्रतिपादित होते हैं तो वह उन्हें ही अपने अंतर में आत्मव्यक्त कर लेता है और यदि ऐसा नहीं है तो या तो वह किन्हीं भी मूल्यों को ग्रहण नहीं कर पाता है या निम्न श्रेणी के मूल्यों को अपने जीवन का आधार बना लेता है। मूल्यों की श्रेष्ठता निर्धारित करने तथा उन्हें आत्मसात करने में परिवार का बहुत बड़ा योगदान है।

भारत जैसे देश में जहां मूल्यों पर विशेष जोर दिया जाता है। वहीं मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है। युवा पीढ़ी स्वतंत्रता, प्रयोग, नवाचार, भोगवाद, आनन्द चाहती है जबकि उनके माता–पिता या दादा–दादी की पीढ़ी परम्परागत समाजीकरण नियंत्रण तथा अधिकार को चाहते हैं। वर्तमान में आधुनिक समाज का एक बड़ा भाग नैतिक अराजकता में जी रहा है। आज मूल्यों का ह्रास नीति एवं सार्वजनिक जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। आज की पीढ़ी भी इससे अछूती नहीं रही है। आज का विद्यार्थी भी स्वार्थ हित संहारक एवं विघटनकारी प्रवृत्तियों में डूबता जा रहा है। स्वार्थपरता एवं अनैतिकता का बोलबाला है। फलस्वरूप अन्तपीढ़ी मूल्यों में संघर्ष प्रारम्भ हो गया है। अतः आज के समय में आवश्यक हो गया है कि हम बालकों के नैतिक मूल्यों पर ध्यान दें। बच्चों के नैतिक विकास हेतु समुचित वातावरण प्रदान करें ताकि उनके व्यक्तित्व का विकास हो। नैतिक मूल्य एवं उत्तम व्यक्तित्व के धनि होकर बच्चे निश्चित रूप से अपने उज्ज्वल भविष्य निर्माण में सफल हो सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाठक, पी.ड़ी. (2007):''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा ।
2. भार्गव, उर्मिला एवं भार्गव, उषा, (2006) शिक्षा सिद्धान्त व शिक्षण कला, राखी प्रकाशन, आगरा,
3. भार्गव, महेश (2007) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण व मापन' एच.पी. भार्गव बुक हाउस आगरा ।
4. मदान, पूनम एवं पाण्डेय, रामशकल (2015–16) 'समसामयिक भारत और शिक्षा' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
5. लाल, रमन बिहारी एवं तोमर, गजेन्द्र सिंह, (2014)शिक्षा के दार्शनिक आधार, आर लाल बुक डिपो, मेरठ,,
6. शर्मा,आर.ए. (2017) पाठ्यक्रम शिक्षण कला तथा मूल्यांकन, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
7. एस.एस. माथुर (2008); एड्यूकेशन साइकोलॉजी, विनोद पुस्तक मन्दिर, रांगेय राघव मार्ग, आगरा
8. सिंह, रामपाल एवं सिंह उमा (2007) शिक्षा तथा उदीयमान भारतीय समाज, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
9. सिंह, डॉ गया (2012)अधिगम कर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
10. श्रीवास्तव, डी.एन., वर्मा प्रीति (2014) बाल मनोविज्ञानः बाल विकास, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

❖◆❖